आतंकवाद : एक समाजशास्त्रीय विवेचन

सुनील कुमार यादव
शोध छात्र
(यू0 जी0 सी0 – एस0 आर0 एफ0),
समाजशास्त्र विभाग,
दी0द0उ0 गोरखपुरवि0 वि0
गोरखपुर

मानवेन्द्र प्रताप सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर

सारांश

आज वैश्विक पटल पर आतंकवाद एक प्रमुख समस्या के रूप में उभरा है। वर्तमान समाज एवं सरकार के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती यह है कि इस समस्या से कैसे निपटा जाए, इसके वास्तविक समाधान हेतु कौन से कदम उठायें जाएं इत्यादि। यदि अवलोकन किया जाए तो समकालीन समाज में भी मानव जाति भय, भूख, अथवा, रोग, बेरोजगारी, भिक्षावृत्ति, अपराध इत्यादि समस्याओं से जूझ रही है ऐसी स्थिति में आतंकवादी गतिविधियों के कारण विश्व के अधिकांश देशों की अर्थव्यवस्था इन त्रासदियों को दूर करने में असमर्थ साबित हो रही है। यदि इतिहास पर नजर डालें तो पुरी दुनिया में आतंकवाद का प्रचलन कोई नवीन प्रघटना नहीं है जबसे मुनष्य झुण्ड एवं कबिलें के रूप में संगठित होना प्रारम्भ किया वहीं से आतंवाद प्रारम्भ हो गया लेकिन आज यह आतंकवाद वैश्विक रूप अपना लिया है। आतंकवाद का मुख्य उद्देश्य होता है हिंसा द्वारा जनमानस में भय एवं आतंक पैदा करना तथा ये उद्देश्य राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक ही नहीं सामाजिक या अन्य किसी प्रकार के भी हो सकते है। आतंकवाद ने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, एवं सांस्कृतिक सभी पक्षों को समग्र रूप में प्रभावित किया है। जिसके कारण हिंसा, अनैतिकता, अविश्वास एवं अन्धविश्वास का बोलबाला हो गया है, जनसामान्य का मनोबल क्षीण हो गया और असामाजिक तत्वों को बल मिला हैं साथ ही आतंकवादी गतिविधियों ने समाज के आर्थिक पहलू को बुरी तरह से प्रभावित किया है।

आतंकवाद के दुष्परिणामस्वरूप अब तक दुनिया के कई राजनयिकों सहित लाखों मासूमों एवं निर्दोष लोगों की जाने जा चुकी है तथा लाखों लोग विकलांग एवं अनाथ हो चुके है। आतंकवाद के सन्दर्भ में सबसे बुरी बात यह है कि कोई नही जानता कि आतंकवादियों का अगला निशाना कौन होगा इसलिए आतंकवाद ने आज लोगों के जीवन को असुरक्षित बना दिया है। यह मानव जाति के लिए एक कलंक बन चुका है। आज आतंकवाद पर प्रभावी नियन्त्रण हेतु जरूरी है कि सभी राष्ट्र अपने पड़ोसी राष्ट्र के प्रति सद्भाव तथा मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करें, आतंकवादियों को प्रशिक्षण देना एवं प्रोत्साहन देना बन्द करें। सभी देशों को एक अन्तर्राष्ट्रीय आचार संहिता तैयार करनी चाहिए। आज समय की मांग है कि राज्य स्वयं को आतंकवाद से दूर रखें, उसे प्रायोजित न करें, अगर वह करता है तो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर राज्य का बहिष्कार होना चाहिए।

मुख्य शब्द : आतंकवादियों, अन्तर्राष्ट्रीय, मनोबल, अविश्वास, अन्धविश्वास, भिक्षावृत्ति

प्रस्तावना

हिंसा के माध्यम से जनमानस में आतंक पैदा कर अपने उद्देश्यों को पूरा करना ही आतंकवाद हैं। यह उद्देश्य राजनीतिक, धार्मिक या आर्थिक ही नहीं सामाजिक या अन्य किसी प्रकार का भी हो सकता है। आतंकवाद के कई प्रकार है किन्तु इनमें से तीन ऐसे है जिनसे पुरी दुनिया त्रस्त है – राजनीतिक आतंकवाद, धार्मिक कट्टरता एवं गैर राजनीतिक या सामाजिक आतंकवाद। श्रीलंका में लिट्टे समर्थको एवं आफगानिस्तान में तालिबानी संगठनों की गतिविधियाँ राजनीतिक आतंकवाद के उदाहरण के रूप में देखी जा सकती हैं वहीं अल–कायदा,लश्कर–ए–तैयबा,जैश–ए–मोहम्मद जैसे संगठन धार्मिक कट्टरता की भावना से अपराधिक कृत्यों को अंजाम देने वाली गतिविधि को हम धार्मिक कट्टरता की श्रेणी में रख सकते है तथा अपनी सामाजिक स्थिति या अन्य कारणों से उत्पन्न सामाजिक क्रान्तिकारी विद्रोह को गैर–राजनीतिक आतंकवाद की श्रेणी में रखा जाता है, इसके उदाहरण के तौर पर हम भारत में नक्सलवाद का अवलोकन कर सकते है। (जैन, 2011)। सम्पूर्ण विश्व आज आतंकवाद की चपेट में है लेकिन भारत की गिनती सर्वाधिक त्रस्त देशों में की जाती है। आज आतंकवाद अपने वैश्विक स्वरूप में परिलक्षित हो रहा है।

आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण, नगरीकरण एवं वश्वीकरण जैसी द्रूतगामी प्रक्रियाओं से विश्व का कोई भी समाज अछूता नहीं है इसने जहाँ एक ओर हमें तथा हमारी अर्थव्यवस्था का स्तर ऊँचा किया है वहीं दूसरी ओर इसका एक स्याह पक्ष भी है जिसमें वैश्वीकरण ने समाज में असमानता, बेरोजगारी, गरीबी, अपराध, धर्मान्धता, क्षेत्रीयता एवं आतंकवाद को बढ़ाने में सहायता दी है। वैश्वीकरण ने गरीब को और गरीब तथा अमीर को और अमीर बना दिया। जबसे आधुनिक युग का वैश्विक युग में रूपान्तरण होना शुरू हुआ तो लोगों में अपनी पहचान की इच्छा पुनः जाग उठी। धार्मिक पहचान की तालाश तेज हो उठी। इसके फलस्वरूप धार्मिक कट्टरतावाद का एक नया संस्करण उभर कर सामने आया जिसका रिश्ता आतंकवाद से हैं आतंकवाद का एक रूप राष्ट्रीय है जिसका उदाहरण अल्जीरिया, मिश्र, सऊदी अरब तथा पाकिस्तान में मिलता है। दूसरा रूप क्षेत्रीय है जिसका उदाहरण काश्मीर, चेचन्या आदि में मिलता है। आतंकवाद का तीसरा रूप वैश्विक है, जिसका उदाहरण 2001 को वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर हमला, 2005 लंदन विस्फोट है जो एक वैश्विक विचारधारा के प्रतीक निर्मित करने के प्रयास थे (Seminar)। भारत बहुत समय से आतंकवाद का शिकार हो रहा है। काश्मीर, नागालैण्ड, पंजाब, असम, बिहार आदि राज्य विशेष रूप से आतंकवाद से प्रभावित रहे हैं यहाँ कई प्रकार के आतंकवादियों का वर्चस्व रहा है जैसे–पाकिस्तानी, इस्लामी, माओवादी, नक्सली, सिख, ईसाई, आदि। भारत के जो क्षेत्र आज आतंकवादी गतिविधियों से लम्बे समय से जुड़े हुये है उनमें जम्मू–काश्मीर, मुम्बई, मध्य भारत (नक्सलवाद) और उत्तर पूर्व के सात राज्य शामिल है। अतीत में पंजाब में पनपे उग्रवाद में आतंकवादी गतिविधियाँ शामिल हो गयी जो भारत के पंजाब राज्य तथा देश की राजधानी दिल्ली तक फैली हुयी थी। वर्ष 2006 में देश के 608 जिलों में से कम से कम 232 जिले विभिन्न तीव्रता स्तर के विभिन्न विद्रोही और आतंकवादी गतिविधियों से पीड़ित थे जिनकी संख्या आज और अधिक हो गयी है।(India Assessment)। 2008 में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार एम0 के0 नारायणन ने भी कहा था कि देश में लगभग 800 से अधिक आतंकवादी गुट सक्रिय हैं जिनकी संख्या का आकलन आज के वर्तमान परिवेश में हम घटनाओं के परिदृश्य से स्वतः लगा सकते है। (Times of India)। देश की आजादी को इतने साल हो गये है लेकिन हम अब तक आतंकवाद और नक्सलवाद जैसी गम्भीर समस्याओं पर काबू नहीं पा सके हैं। भले ही हमारा देश तेज गति से विकास करने वाला देश बन गया हो, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उसकी अपनी एक अलग पहचान बनी हो, मगर बात जब आतंकवाद और नक्सलवाद पर काबू पाने की होती है तो हम अपने हाथ पूरी तरह खाली पाते है (Hindi.webdunia)

वर्तमान युग को विज्ञान तकनीकी एवं विकास का युग माना जाता है। आज आतंकवाद जाति धर्म, क्षेत्र तथा राष्ट्र की सीमा लाँघते हुए अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप धारण कर लिया है ऐसे दौर में जिहादी अपने विचारों एवं क्रियाओं को प्रचारित करने के लिए आई.टी. तकनीकियों का प्रयोग कर रहे है। ड्रग माफियाओं, आतंकवादियों, संगठित अपराधियों के मध्य बढ़ रहा नेटवर्क वैश्वीकरण की देन है। जिहादी आज भी धन का वितरण एवं हस्तान्तरण उन माध्यमों से करते हैं, जिनको पकड़ पाना लगभग नामुमकिन है (फाड़िया)। आतंकवाद की सबसे बड़ी चुनौती आतंकवादियों के पास अत्याधुनिक हथियारों का होना हैं। अब आतंकवादी संगठनों के पास विभिन्न प्रकार के घातक शस्त्र एवं विस्फोटक उपलब्ध हैं। नाभिकीय, रासायनिक एवं जैविक हथियार भी आतंकवादियों के पहुँच की परिधि में है।

मानव सृजनशील एवं विवेकशील तथा सामाजिक प्राणी हैं वह एकान्त जीवन नहीं व्यतीत कर सकता। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक–दूसरे के सम्पर्क में आते है। समाज का संचालन नियम, उपनियम, विधि एवं संहिताओं तथा परम्पराओं से होता है। इसके संचालन के लिए मानव द्वारा अनेक समुदायों एवं संस्थाओं का निर्माण किया गया है। ये समुदाय एवं संस्थाएँ परिवार, राज्य तथा सरकार के रूप में विद्यमान है जो प्रायः अनिवार्य भी है। इसके अतिरिक्त मानव द्वारा और भी शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संस्थाएँ और संगठन निर्मित किये गये है। इन सभी प्रकार के संस्थाओं और संगठनों का निर्माण मानव जीवन को सरल, सभ्य एवं सुसंस्कृत, सद्पयोगी, शान्तिमय, सुखी और समृद्ध बनाने के लिए किया गया है। इन स्वनिर्मित संस्थाओं द्वारा यथासम्भव नियम, उपनियम तथा विधियों का निर्माण किया जाता है जिसके अनुपालन से ही सार्थकता सिद्ध होती है। इन नियमों, विधियों तथा कानूनों के अतिरिक्त परम्परायें होती है जिसका अनुपालन मनुष्य स्फूर्ति के साथ करता है। इन नियमों, उपनियमों एवं परम्पराओं का उल्लंघन अपराध है जो दण्डनीय होता है। आतंकवाद का संकट अन्तर्राष्ट्रीय समाज को बहुत अधिक प्रभावित कर रहा है। यह वैश्विक पटल पर प्रमुख मुद्दा बनकर उभरा हैं। इस संकट से विश्व के अधिकांश देश प्रभावित है। इन प्रभावित होने वाले प्रमुख देशो में संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, इजराइल, केन्या, भारत एवं ब्रिटेन है। अलकायदा की जड़े राष्ट्र राज्य की सीमाओं का उल्लंघन कर चुकी हैं इसने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्थाओं की दीवार को ध्वस्त कर दिया। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की वर्तमान व्यवस्था में ज्वलन्त एवं संकटमय कारक के रूप में आतंकवाद को माना जा रहा है। समय बदला, समय के साथ मानवता बदली, उस बदलाव के साथ मानव की अपराधिक प्रवृतियों में तेजी से बदलाव आया। वैज्ञानिक प्रगति और तकनीकी का लाभ उठाकर आतंकवाद इतना विकराल व भयावह हो चुका है कि आतंकवाद के वर्तमान स्वरूप को महाआतंक की संज्ञा दी जा सकती है। (विस्वाल,2010)।

20वीं सदी का आतंकवाद अपने स्वरूप में विलक्षण है। यह समाज तथा राज्य व्यवस्था के लिए एक कलंक स्वरूप हैं यह अपने स्वरूप में वैश्विक है अर्थात् विश्व भर के आतंकवादियों में आपसी भाईचारा है क्योंकि उनमें मूलभूत विश्वासों तथा उनकी कार्य करने की प्रणाली एक जैसी है (फाड़िया)।

वास्तव में देखा जाए तो आतंकवाद के दो चेहरे प्रमुख है

(1) धार्मिक एवं (2) राजनीतिक आतंकवाद।

धार्मिक आतंकवाद के पाँच आधाभूत नियम है जो निम्न है

1. धर्म को लोगों की पहचान और उनके अस्तित्व की सुरक्षा के साथ जोड़ दें।
2. लोगों में यह विश्वास पैदा करों कि केवल उन्हीं का धर्म अधिक पवित्र और गौरवशाली है।
3. धार्मिक उन्माद फैलाने के लिए लोगों में यह भावना भरों कि उनसे भिन्न धर्म मानने वाले दुनिया के सभी लोग उनके दुश्मन है।
4. उन्माद की हद तक यह विचार फैलाओं कि समान धर्म के लोगों में ही भाईचारा हो सकता है।
5. लोगों में इतना धार्मिक उन्माद भर दो कि अपने धर्म के लिए वे अपनी जान की परवाह न करें।

सम्पूर्ण विश्व में धार्मिक आतंकवाद के रूप में इस्लामी आतंकवाद आज सबसे बड़ी समस्या बनकर उभरा है।

राजनीतिक आतंवाद

इस आतंकवाद का आरम्भ सन् 1921 में आयरिश रिपब्लिकन आर्मी द्वारा हुआ था जिसका उद्देश्य तोड़–फोड़ और हत्याओं के द्वारा आयरलैण्ड को ब्रिटेन से अलग करने के लिए सरकार पर दबाव डालना था। इंग्लैण्ड के अतिरिक्त भारत, अल्जीरिया, केन्या और साइप्रस ने भी विभिन्न संगठनों द्वारा राजननीतक आतंकवाद का सहारा लिया किन्तु इस तरह का आतंकवाद दुनिया के किसी भी देश में अधिक प्रभावपूर्ण नहीं बन सका। बलजीत सिंह ने लिखा है कि सन् 1969 तथा 1975 के बीच विश्व के लगभग चालीस से अधिक देश आतंकवाद से ग्रसित थे। इस पूरे परिप्रेक्ष्य में भारत तथा विश्व के दूसरे देशों में आतंकवाद की समस्या को समझने से ही वास्तविक प्रकृति को समझा जा सकता है (अग्रवाल)।

भारत में आतंकवाद

आज आतंकवाद की आग से सम्पूर्ण विश्व जल रहा है इसने विश्व के लगभग सभी देशों को अपनी चपेट में ले लिया है। 11 सितम्बर 2001 को पुरी दुनिया ने आतंकवाद का एक नया चेहरा देखा इसने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों और मानवीय सुरक्षा के इतिहास में एक नये अध्याय का भी श्रीगेणश किया। आज विश्व का सबसे शक्तिशाली राष्ट्र भी अपने को असुरक्षित महसूस कर रहा है (त्रिपाठी)। 11 सितम्बर 2001 को अमेरिका के न्यूर्याक स्थित वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर तथा 26 नवम्बर 2008 को मुम्बई में हुआ आतंकी हमला इस बात का साक्षी है। भारत में आतंकवाद से सर्वाधिक त्रस्त राज्य जम्मू–कश्मीर है। जम्मू–काश्मीर में स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से ही आतंकवाद प्रारम्भ हो गया जिसको हमेशा पाकिस्तान का समर्थन मिलता रहा है किन्तु 1986 के बाद से यह गम्भीर रूप धारण कर भारत के लिए एक ज्वलन्त समस्या बन गया है। इस आतंकवाद का केन्द्र केवल अलगाववादी संगठन ही नहीं बल्कि मुस्लिम कट्टरपंथी एवं पाकिस्तान समर्थित संगठन भी हैं (जैन p.p. 34)। जम्मू–काश्मीर के विभिन्न आतंकवादी गुटों के विषय में हास्यास्पद तथ्य यह है कि वे स्वयं एकमत नहीं है कि भारतीय संविधान के अन्तर्गत और अधिक स्वायतता चाहते हैं या पूरी आजादी। इसी प्रकार पाक अधिकृत काश्मीर (पी0ओ0के0) के बारे में भी अस्पष्ट और उलझे हुए यह एक और तथ्य उल्लेखनीय है कि पंजाब का आतंकवाद बहुत सीमा तक प्रायोजित था। काश्मीर का आतंकवाद पूर्णतः पाकिस्तानी खुफिया एजेन्सी आई.एस.आई. द्वारा प्रेरित, पोषित एवं प्रायोजित है। पूर्वोत्तर राज्यों में आतंकवाद भी कुछ सीमा तक बंगलादेश और म्यामार से नियोजित होता रहा है। काश्मीर में आतंकवादी गतिविधियों के वैश्वीकरण के फलस्वरूप उनकी गतिविधि, रणनीति तथा केन्द्र परिवर्तित हो गये है, उनके क्षेत्र घाटी के बाहर के क्षेत्र हो गये हैं और उनके द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर हमले शुरू कर दिये गये है (जैन, शारदा)। यदि भारत में आतंकवाद के परिदृश्य का अवलोकन किया जाए तो स्पष्ट होता है कि यह सम्पूर्ण विश्व के आतंकवादी परिदृश्य से भिन्न नहीं है जितने तरह की आतंकवादी घटनाएँ विश्व में घटित हुई हैं, उससे भारत भी अछूता नहीं रह पाया है। 10 मार्च 1993 मुम्बई बमबारी, फरवरी 1993 में कोयम्बटूर बम धामके, सितम्बर 2002 में अहमदाबाद का अक्षरधाम मन्दिर, अगस्त 2007 में लुम्बनी पार्क बम धमाके इसके उदाहरण है। राष्ट्रीय महत्व के स्थानों पर हमलों के रूप में दिसम्बर 2001 में संसद पर हमला तथा 2002 में लाल किला पर किया गया हमला इसका ज्वलन्त उदाहरण है (मिश्र 2011)।

किसी भी तरह के भावी आतंकवाद से निपटने के लिए अपने राष्ट्र के बचाव हेतु ठोस रणनीति बनाने की जरूरत है। वैश्विक आतंकवाद से निपटने का सर्वोत्तम उपाय यह है कि शैन्य बलों को तत्पर रहने के लिए प्रोत्साहित किया जाए, राष्ट्रीय सेनाओं के साथ काम करने वाले संयुक्त बलों का गठन किया जाए। साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद के खिलाफ युद्ध में शामिल मुख्य देशों द्वारा दिखाये जा रहे अड़ियलपन को देखते हुए भविष्य में अन्तर्राष्ट्रीय उपायों में तर्कशीलता लाने की आवश्यकता है जिसे सभी देशों को सामूहिक रूप से ग्रहरण करना चाहिए। जब तक अपनी धारणाओं के लिए विनम्रता और दूसरों की धारणाओं के लिए सम्मान का भाव नहीं होगा, विश्व के फिर से उन सख्त विभाजनों की ओर प्रेरित होने का खतरा है, जो शीत–युद्ध काल में अनुभव किया गया था। यदि ऐसा होता है तो 'सभ्यताओं का टकराव' शुरू हो जाएगा और वह लम्बे समय तक जारी भी रह सकता है, जिसके परिणामस्वरूप एक अर्द्ध–निर्जीव ग्रह रह जाएगा जो किसी भी विजयी सभ्यता के लिए उपयोगी नहीं होगा। अवलोकनोपरान्त हम पाते है कि इस महा–आतंक की अवधारणा ने सम्पूर्ण मानवता को संदिग्ध परिस्थितियों में डाल दिया है, राष्ट्रीय स्तर पर इससे निपटने के लिए अनुकूल और प्रभावी नीतियों का निर्माण होना चाहिए। आतंकवाद की समस्या का सही समाधान यही हो सकता है कि जिन कारणों से इसमें निरन्तर वृद्धि हो रही है उसे दूर करने का प्रयास किया जाये। इसके लिए पिछड़े इलाकों के युवक–युवतियों को रोजगार मुहैया कराने जैसे कदम अत्यधिक कारगर सिद्ध हो सकते है। भारत में कुछ इलाकों में लोग अपने हक प्राप्ति हेतु नक्सलवाद का सहारा ले रहे है, ऐसे इलाकों की पहचान कर उन्हें उनका अधिकार प्रदान करना अधिक उचित होगा। आतंकवाद की समस्या के समाधान के लिए पुरी दुनिया को मिलकर एक व्यापक रणनीति बनाना ही वर्तमान समय की माँग है। चूँकि आतंकवाद आज वैश्विक समस्या का रूप ले चुका है इसलिए इसका समाधान अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एवं प्रयासों से ही संभव हो सकता

है। अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद जैसी भयावह चुनौती से निपटने के लिए दुनिया के सभी छोटे–बड़े देशों को एकजूट हो जाना चाहिए क्योंकि यह चुनौती किसी एक देश की नहीं वरन् सम्पूर्ण मानव समाज की है।

Bibliogorphy

1. जैन, योगेश चन्द्र (2011), निबन्ध माला 221 हिन्दी निबन्ध, अरिहन्त पब्लिकेशन्स् (इण्डिया) लिमिटेड, दिल्ली, जुलाई 2011, पृ.सं. 34।
2. Seminar ; International seminar on Poworty and Humanitarianism:Challanges and Solution , Organized by Dept. of Sociology, MGKV Varanasi, U.P., India, on dated Feb 11-12,2012.
3. http:// hi.wikipedia.org/s/yaj = Hkkjr esa vkradokn (India assessment 2007)
4. http://timesofIndia.Indiatimes.com/news/india/800-terror-calls-active-in-country/articleshow/3356589.cam
5. http://India.webdunia/independence-day-special/Hkkjr esa vkradokn ls निपटने का दम है पर -113081100025-1.htm
6. फाड़िया, बी0एल0 य अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, वर्ष, 2011।
7. विस्वाल, तपन (2010) य अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, मैकमिलन इण्डिया लि0, वर्ष, 2010।
8. फाड़िया, बी0एल0 य अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, वर्ष, 2011, पृ0सं0 – 590।
9. अग्रवाल, जी0के0 य सामाजिक समस्याएँ, एस0वी0पी0डी0 पब्लिशिंग हाउस, वर्ष, 2011–12।
10. त्रिपाठी, श्रीप्रकाश मणि य प्रमुख राजनीतिक अवधारणाएँ एवं संकल्पनाएँ, प्रत्युश प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष, 2010।
11. जैन, योगेश चन्द्र यः निबन्धमाला 221 हिन्दी निबन्ध, अरिहन्त पब्लिकेशन्स इण्डिया लि0, जुलाई 2011, पृ0सं0–34
12. जैन, शारदा य भारत में आतंकवाद – पंजाब के सन्दर्भ में।
13. मिश्र, समीरात्मज (2011) य निबन्ध eatw"kk] Tata Mcgraw Hill's Education Private Ltd, New Delhi, Year 2011.
14. http://pustak.org/home.php?bookid.2638 आतंकवाद/मेजर जनरल विनोद सहगल।